(3) किसी देश के लिए विशेष मौसमी कारणों की वजह से कुछेक कीटनाशी दवाइयों का स्वीकार न किया जाना,

(4) पशुओं तथा पर्यावरण में फैले जाने वाले अवशेषों संबंधी स्थानीय अध्ययन,

(5) कीटों पर कीटनाशी दवाइयों का असर होना बंद हो जाना, और

(6) पारिस्थितिक कारक।

(ग) हमारे देश में इन कीटनाशी दवाइयों के इस्तेमाल पर अब तक रोक न लगाने के मुख्य कारण इस प्रकार हैं:—

(1) सुरक्षित/सस्ती वैकल्पिक दवाइयों का उपलब्ध न होना अर्थात् जन-स्वास्थ्य में डी०डी०टी०।

(2) विशेष कृमियों और रोगों की स्थिति से निपटना।

(3) शीतोष्ण क्षेत्र के देशों की तुलना में भारतीय पर्यावरण में कीटनाशी दवाइयों की प्रभाविकता तेजी से समाप्त होना।

(4) अनुसंधान और विस्तार एजेंसियों द्वारा संस्तुत ध्यानपूर्वक विचारित इस्तेमाल के तरीके।

चीनी का उत्पादन

1882 **सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा:** क्या **खाद्य और नागरिक पूर्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि पिछले वर्ष के पिराई मौसम की तुलना में इस वर्ष चीनी का उत्पादन अधिक हुआ है;

(ख) यदि हां, तो उसकी मात्रा कितनी है,

(ग) क्या यह भी सच है कि इस अवधि के दौरान देश में चीनी की खपत बढ़ी है,

(घ) यदि हां, तो अनुमानित खपत कितनी है, और

(ङ) देश में चीनी की वर्तमान मांग को दृष्टि में रखते हुए अगले वर्ष के लिए उत्पादन का क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार क्या प्रोत्साहनकारी कदम उठा रही है?

खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय में उप मंत्री (श्री डी० बैता): (क) और (ख) जी। हां। 22.2 1989 को स्थिति के अनुसार चालू मौसम के दौरान 55.25 लाख मीटरी टन चीनी का उत्पादन हुआ जबकि पिछले मौसम में उसी अवधि के दौरान 49.49 लाख मीटरी टन चीनी का उत्पादन हुआ था।

(ग) जी हां।

(घ) चालू गौसम के दौरान चीनी की खपत पिछले वर्ष 93.33 लाख मीटरी टन की हुई खपत की तुलना में अधिक होने का अनुमान है।

(ङ) मौसम की स्थितियों और अन्य संगत तथ्यों के कारण गन्ने के उत्पादन में उतार-चढ़ाव होने की वजह से आगामी मौसम 1989-90 के लिए चीनी के उत्पादन के कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किए गए हैं। तथापि, चीनी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए गए हैं जिनमें प्रत्येक वर्ष गन्ने के सांविधिक न्यूनतम मूल्य में वृद्धि करना, सांविधिक न्यूनतम मूल्य की पेशगी घोषणा करना, लेवी से मुक्त बिक्री के कोटे के अनुपात में परिवर्तन करना, नयी चीनी फैक्ट्रियों के लिए लाइसेंस देना, वर्तमान क्षमताओं में विस्तार करना, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं और आधुनिकीकरण तथा गन्ने के विकास के लिए चीनी विकास निधि से वित्तीय सहायता प्रदान करना शामिल हैं।

Conference of Food and Civil Supplies Ministers of States and Union Territories

1883. SHRI KAPIL VERMA
SHRIMATI VEENA VERMA:
KUMARI SUSHILA TIRIA:
SHRI RAJUBHAI A. PARMAR.

Will the Minister of FOOD AND CIVIL SUPPLIES be pleased to refer to reply to Starred Question 58 given in the Rajya Sabha on the 24th February, 1989 and state whether any conference of Food and Civil Supplies Ministers from States and Union Territories was held recently; if so, action taken on their recommendations?